भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने मनाया विश्व पोषण दिवस

नई दिल्ली, 29 मई 2023: भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR)-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई), नई दिल्ली ने विश्व पोषण दिवस के अवसर पर एक परिचर्चा (पैनल डिस्कशन) व किसान-वैज्ञानिक संवाद का आयोजन किया। कार्यक्रम आईएआरआई व एसएमएल लिमिटेड के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ। आयोजन का मुख्य उद्देश्य भूमि स्वास्थ्य, फसल उत्पादन, मानव स्वास्थ्य और पशु स्वास्थ्य पर संतुलित पोषक उर्वरकों के महत्व पर चर्चा करना था।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व ICAR के सहायक महानिदेशक (सस्य विज्ञान, कृषि वानिकी व जलववायु परिवर्तन) डॉ. राजबीर सिंह ने इस अवसर पर कहा कि पंजाब कृषि क्षेत्र तो पूरी दुनिया में आगे जा रहा है, लेकिन पानी के उचित संचयन और संतुलित रासायनिक खाद के अभाव से वह एक रेगिस्तानीले सामरिक इलाके की ओर बढ़ रहा है। पंजाब में अनाजों का उत्पादन बढ़ाने के लिए हमें जमीन की स्वास्थ्य और उर्वरकों की उचित मात्रा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। साल 2030 तक भारत 350 मिलियन टन अनाज का उत्पादन करने लगेगा. लेकिन हमें खेतों के संतुलित पोषण का भी ध्यान रखना होगा. कुछ साल पहले पंजाब के 40 फीसदी गेहूं एरिया में जिंक की कमी थी, यह अब घटकर सिर्फ 10 फीसदी एरिया में रह गई है. ऐसी ही कोशिश सभी को मिलकर करनी है.

भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार कार्यालय में कार्यरत वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. एम मोहंती ने कहा कि अगर जमीन में किसी भी माइक्रो न्यूट्रिएंट की कमी है तो उसकी कमी कृषि उपज में भी आएगी. इसलिए रासायनिक उर्वरकों का संतुलित इस्तेमाल करें. मिट्टी किस प्रकार की है उसके हिसाब से उसका ट्रीटमेंट होना चाहिए.

पूसा के सीनियर साइंटिस्ट डॉ. आर एस बाना व डॉ. वाई एस शिवे ने कहा कि खेती को 17 पोषक तत्वों की जरूरत होती है. लेकिन दुर्भाग्य से हम नाइट्रोजन और फास्फोरस का ही इस्तेमाल ज्यादा करते हैं. इससे उत्पादन पर बुरा असर पड़ रहा है. किसानों को जब भी उत्पादन कम लगता है तो वो खेती में और नाइट्रोजन यानी यूरिया झोंक देते हैं. एक तरह से जमीन को यूरिया का नशा दे दिया है. जबकि स्वायल हेल्थ कार्ड की रिपोर्ट के अनुसार खाद का इस्तेमाल करना चाहिए था. माइक्रो न्यूट्रिएंट का इस्तेमाल करना चाहिए था.

इस मौके पर नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फूड टेक्नोलॉजी एंटरप्रेन्योरशिप एंड मैनेजमेंट (NIFTEM) की प्रोफेसर दीप्ति गुलाटी ने कहा कि देश के 67 फीसदी बच्चों और 57 फीसदी महिलाओं में खून की कमी है, क्योंकि हमारे भोजन में आयरन की कमी है. खेती को संतुलित पोषण मिलेगा तभी मानव में इसकी कमी दूर होगी. क्योंकि हम जो भी खा रहे हैं वो जमीन से ही लिया गया है.

इस मौके पर साउथ एशिया जिंक न्यूट्रिएंट इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर डॉ. सौमित्र दास ने कहा कि रासायनिक खादों के इस्तेमाल के असंतुलन ने जमीन में पोषक तत्वों की कमी कर दी है. इस समय देश की 40 फीसदी मिट्टी में जिंक की कमी है. जबकि 80 फीसदी मिट्टी में सल्फर की कमी है. इस समय देश में सालाना 12 से 13 लाख टन जिंक की आवश्यकता है जबकि 2 लाख टन का ही इस्तेमाल हो रहा है. इसकी जगह पर नाइट्रोजन का इस्तेमाल ज्यादा हो रहा है.

एसएमएल लिमिटेड की डायरेक्टर कोमल शाह भुक्कनवाला ने कहा कि आजादी के वक्त देश में सिर्फ 50 मिलियन टन अनाज का उत्पादन होता था, जो अब बढ़कर 325 मिलियन टन हो गया है. इसके बावजूद पोषण सुरक्षा की चुनौती हमारे सामने खड़ी है. क्योंकि कृषि उत्पादों की गुणवत्ता घट रही है. अधिकांश अनाजों, दालों और फलों-सब्जियों में प्रोटीन और सूक्ष्म पोषक तत्वों की मात्रा कम हो रही है. खाद इस्तेमाल के इस पैटर्न को बदलने की जरूरत है.

एमएसपी कमेटी और क्रॉप डायवर्सिफिकेशन कमेटी के सदस्य कृष्णवीर चौधरी ने कहा कि खेती में सिर्फ नाइट्रोजन और फास्फोरस डालने से फसलों की उत्पादकता कम हुई है. स्वायल हेल्थ, प्लांट हेल्थ, एनिमल हेल्थ और ह्यूमन हेल्थ सब एक दूसरे से जुड़े हुए हैं. उन्होंने कहा कि क्रॉप डायवर्सिफिकेशन आज देश की जरूरत है.

WORLD NUTRITION DAY
खेतों के संतुलित पोषण से पौष्टिक आहार तक
SML
खेतों के संतुलित पोषण से,
पौष्टिक आहार तक
SML Limited
80%

WORLD NUTRITION DAY
विश्व
पोषण दिवस